Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

रामायण का सांस्कृतिक मूल्यांकन

डॉ० संजय कुमार
ग्राम -अकबरपुर, जिला – नवादा
बिहार (भारत)

सारांश – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत 'रामायण' भारतवर्ष का ऐतिहासिक सांस्कृतिक आदि महाकाव्य है। यह आर्य संस्कृति एवं मानवता का महान उद्घोषक के साथ ही प्रेम, दया, करूणा, अहिंसा, तप, त्याग एवं राष्ट्र निर्माण का आधार स्तम्भ है। चरित्र निर्माण एवं सलिल संस्कृति का संरक्षक है।

मुख्य शब्द :- ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, उद्घोषक, अहिंसा, स्तम्भ ।

भारतीय संस्कृति के पावन प्राणाधार, उदात्त अनुपम आदर्शों के पावन पुजारी, महिमा मण्डित मानवता के अलौकिक इतिहास में सहजता, सरलता सौम्य साधुता की मंगल-मूर्ति, अमल आलोक के पावन पुंज **"कविः मनीषिः परिभूः स्वयम्भूः"** को सत्य सिद्ध करने वाले महामानव महर्षि वाल्मीकि विश्व साहित्य के प्रथम आदिकवि एवं उनकी आदिकाव्य 'रामायण' भारतवर्ष का ऐतिहासिक महाकाव्य है। इनकी पावन प्रतिभा से प्रभावित होकर ही श्री शार ने लिखा है-

कविन्दुं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामयणीं कथाम् ।

चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।। (1)

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत 'रामायण' भारतवर्ष का ऐतिहासिक महाकाव्य है, जो विविध काव्यों, नाटकों, संस्कृतियों को अपनी चिरन्तन यात्रा के लिए पाथेय प्रदान करने में सर्वथा समर्थ है। इस महाकाव्य में आदिकवि ने प्राचीन भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवस्था के काव्यात्मक वर्णन के साथ-साथ रामकथा के माध्यम से राम-सीता एवं हनुमान के उदात्त जीवन का चित्रण अत्यन्त मर्मस्पर्शी एवं ललित शैली में किया है। यह महान् मानवता के इतिहास का सबसे अनमोल महाकाव्य है। रामायण की जीवनी शक्ति या स्थिरता का संकेत स्वयं इस ग्रन्थ से ही प्रमाणित होता है -

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।

तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति ।। (2)

डॉ. नागेन्द्र उपाध्याय ने अपनी शोधप्रबन्ध में लिखा है- "स्वयं वेदों ने ही महर्षि वाल्मीकि के माध्यम से रामायण महाकाव्य का स्वरूप धारण किया। अस्तु, यह महाकाव्य पौरूषेय होने के बावजूद अपौरूषेय वेदों की तरह निर्मल एवं निर्दोष बन गया है। वेदावतार वाल्मीकीय रामायण सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) एवं हिन्दू संस्कृति अर्थात् भारतीय संस्कृति का अलौकिक आधारशिला है। [3] वस्तुतः रामायण विभिन्न संस्कृतियों का दिग्दर्शन कराने वाला दर्पण है।

"नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा" भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं की जानने एवं समझने के लिए रामायण में वर्णित सांस्कृतिक परिस्थितियों से सुपरिचित होना अत्यपेक्षित है। महर्षि वाल्मीकि ने आर्य-संस्कृति में अत्युत्तम तथा अति प्राचीन एवं

उत्कृष्ट युग को साकार रूप में प्रतिष्ठित किया है। सही माने में रामायण आत्मनिष्ठ और सुसंकृत जाति के जागृत अस्तित्व एवं सशक्त संजीव चेतना का पवित्र, पुरातन प्रतिविम्ब स्वरूप है। वस्तुत: रामायण आर्य-संस्कृति की अलौकिक आधार शिला स्वरूप है। (4) तत्कालीन भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक स्वरूप कल्पना के ऊपर वाल्मीकीय रामायण का प्रभाव अत्यन्त अद्‌भुत एवं अद्वितीय है। सच तो यह है कि वाल्मीकीय रामायण एवं तत्कालीन भारतीय संस्कृति ही रामायण है तथा रामायण ही भारतीय संस्कृति है। 'भारतीयों ने राम राज्य को सदा से पुराण का पर्यायवाची माना है और आज भी वही हमारी शासन व्यवस्था का आदर्श है। रामायण में कोमल भावनाओं का चित्रण है, जिनसे हमारा कौटुम्बिक जीवन ओत-प्रोत रहता है। हिन्दुओं की रीति-नीति और धर्म-कर्म को प्रभावित करती हुई, वह आज भी इनके सामने सत्य, सदाचार और कर्त्तव्य-पालन का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करती है।" (5)

भारतीय गार्हस्थ्य जीवन का जितना विस्तृत जीवंत एवं मंजुल स्वरूप रामायण में निर्दिष्ट है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। आदर्श माता, पिता, भ्राता, पति, पत्नी, गुरू, शिष्य, स्वामी, सेवक, राजा, प्रजा तथा शत्रु एवं मित्र के जिन आदर्शों को यहाँ उपस्थापित किया गया है वह अनुपम है। साथ ही इस महानतम महाकाव्य का कथानक कमनीय के साथ-साथ सर्वतोभावेन ग्रहणीय एवं प्रशंसनीय है। इसमें लक्ष्मण-सीता, सहित श्रीराम का दक्षिण भारत का पर्यटन, मार्ग में ऐतिहासिक विभूतियों से मिलाप, भयानक लंकाधिपति रावण का पराभव, विजयोपरान्त श्रीराम का अयोध्या परावर्तन जैसी पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन हुआ है। इसमें श्रीराम कथा के माध्यम से मानवता की कथा कही गयी है

"चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम् ।

एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातक नाशनम् ।।'' (6)

"रामायण में पितृभक्ति, पुत्र-प्रेम, स्वामि भक्ति गुणों का एवं सत्य, धर्म, सदाचार, कर्तव्यनिष्ठा आदि सामान्य गुणों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। अन्याय पर न्याय की अन्तत: विजय का निरूपण करना रामायण का प्रमुख तथा आशावादी पक्ष है। आदर्श मानव के रूप में सभी गुणों से विभूषित नायक राम का चित्रण करके वाल्मीकि काव्य में नायक की व्यवस्था का प्रवर्तन किया है। राम के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और चारित्रिक गुणों का वाल्मीकि ने सूत्ररूप में चित्रण कर के पुन: उनका विस्तृत प्रदर्शन किया है।" (7)

वस्तुत: महर्षि की रामायण काव्य मात्र न होकर दो भिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं की संघर्षमयी कहानी है। आर्य का अनार्य पर, धर्म का अधर्म पर, सत्य का असत्य पर विजय का गौरवगान है। उस समय आर्य तथा अनार्य (राक्षस) प्रजाति के बीच अपनी अपनी संस्कृति को विकसित एवं स्थापित करने की होड़ लगी थी। इसमें आर्य संस्कृति तो मानव मूल्यों की पोषक थी, वही अनार्य संस्कृति पूर्णत: मानव मूल्यों की विध्वंसक प्रवृति रखती थी। श्रीराम आर्य संस्कृति एवं मानवता के महानायक है, वही रावण अनार्य संस्कृति दानवता का प्रतिनिधित्व करता है। मानवता का अर्थ है मर्यादा और दानवता का उच्छृखलता। जहाँ मानवता सुख-शांति, उन्नति उत्थान एवं सेवा भाव की जननी है, वही दानवता दु:ख-दावानल, अशान्ति, पीड़ा, हिंसा की जननी है। राम में विद्यमान रावणत्व अविनय, उद्दण्डता एवं उच्छृङ्खलता है। श्रीराम एवं रावण के शील स्वभाव के अन्तर के वर्णन की झांकी को स्पष्ट करते हुए कवि कहता है-

सर्वे ज्ञानोपसम्पन्ना: सर्वे समुदिता गुणै: ।
तेषामपि महातेजा राम: सत्यपराक्रम: । ।
दृष्ट: सर्वस्य लोकस्य शशाङ्क इव निर्मल: ।
गजस्कन्धेऽश्वपृष्ठे च रथचर्यासु सम्मत: ।। (8)

वहीं महाकवि तुलसी के श्रीराम चारित्रिक उच्चाईयों के छलकते हुए ज्योति कलश हैं–

राम जनमि जगु किन्ह उजागर ।

रूप सील सुख सब गुन सागर ।।

पुरजन परिजन गुरु पितु माता।

राम सुमाउ सबहिं सुख दाता।। (9)

माता–पिता, गुरू की वंदना करना अनुजों को स्नेह, अतिथियों का आदर सम्मान करना, दलित निषादराज को गले लगाना, परित्यक्ता अहिल्या का उद्धार करना, शबरी के जूठे बेर का प्रेम पूर्वक ग्रहण, पीड़ित सुग्रीव को गले लगाना, ऋषियों की रक्षा करना, स्त्रियों को मान–सम्मान देना महापुरुष श्रीराम की संस्कृति, संस्कार और उच्चतम आदर्श है।

वहीं इसके ठीक विपरीत ऋषियों को सताना, स्त्रियों का अपमान करना, घृणा, हिंसा, दमन और अत्याचारी प्रवृति द्वारा भय–आतंक का साम्राज्य स्थापित करना रावण की संस्कृति है। महाकवि वाल्मीकि कहते हैं

"उद्वेजयति लोकांस्त्रीनच्छितान द्वेष्टि दुर्मतिः ।

शक्र त्रिदशराजानं प्रार्षयितुमिच्छति ।।

ऋषिन् यक्षान् सगन्धर्वान् ब्राह्मणान् सुसंस्तदा।

अतिक्रामति दुर्धर्षो वरदानेन मोहितः ।। (10)

"चलत दशानन डोलत अवनी।

गर्जत गर्भस्त्रवहिं सुररवनी।।

रावन आवत सुनेउ सकाहा।

देवन्ह तके मेरू गिरि सोहा।। (11)

निष्कर्षतः रामायण तत्कालीन संस्कृति और समाज का आधार भूत ग्रन्थ है। राम–राज्य सुराज्य का पर्यायवायी होकर आज हमारी शासन–व्यवस्था का आदर्श है। रामायण में कौटुम्बिक जीवन को निखारने वाली कोमल भावनाओं का मार्मिक चित्रण है। हिन्दुओं(आर्य) की जीवन–यापन प्रवृति को प्रभावित करती हुई आज भी उनके समक्ष सत्य, सदाचार, त्याग और कर्त्तव्य पालन का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करती है। इसीलिए यह राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. सुभाषित पद्धति, शार
2. वा॰ रा॰, बा॰ का॰, द्वि॰ स॰ श्लोक - $36^{1/2}$ $37^{1/2}$,
3. डा॰ नागेन्द्र उपाध्याय कृत–वाल्मीकीय रामायण में हनुमच्चरित्र के विभिन्न आयाम
4. डा॰ नागेन्द्र उपाध्याय कृत–वाल्मीकीय रामायण में हनुमच्चरित्र के विभिन्न आयाम
5. रामायण का सांस्कृतिक महत्त्व पृ॰–3
6. वा॰ रा॰ पारायण विधि
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'–पृ॰–137
8. वा॰ रा॰ बा॰ का॰ 18/26–27
9. रामचरित मानस, अयो॰ का॰ दो॰–199/3
10. वा॰ रा॰, बाल का॰ 15/8, 9
11. रा च मा, बा का 181/5–6